शिक्षिका के जज़्बे ने आँगनवाड़ी को बनाया सीखने का केन्द्र

अनन्या डी

एक आँगनवाड़ी, जहाँ शिक्षिका के प्रयासों से न सिर्फ़ नामांकन 10 से बढ़कर 45 तक पहुँचा, बल्कि बच्चों का सीखना भी काफ़ी बेहतर हुआ। शिक्षिका ने यह किस तरह किया; कैसे इस प्रक्रिया में समुदाय को शामिल किया; कैसे बच्चों की संख्या बढ़ी और उनका सीखने में मन लगा; इन्हीं जिज्ञासाओं के जवाब तलाशता है यह आलेख।

जब शंकरम्मा साल 2010 में एक आँगनवाड़ी शिक्षिका के रूप में एकीकृत बाल विकास सेवा (आईसीडीएस) विभाग में शामिल हुईं, उनके केन्द्र में बमुश्किल 10 से 15 बच्चे ही आते थे। इनमें ज़्यादातर केवल भोजन के लिए ही आते थे। अभिभावकों को शाला-पूर्व शिक्षा की बहुत कम जानकारी थी। केन्द्र में किसी ने सीखने की पहले से नियोजित गतिविधियों के बारे में नहीं सुना था।

शंकरम्मा को केन्द्र में नियमित रूप से उपस्थित रहने, और ईमानदारी के लिए जाना जाता था। उनका सपना था कि बच्चों को मध्याह्न भोजन के अतिरिक्त भी कुछ मिलना चाहिए। उन्हें यह अवसर 2019-20 में तब मिला, जब अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन ने कलबुर्गी ग्रामीण ब्लॉक में अपनी ईसीई सहभागिता शुरू की। मासिक कार्यशालाओं, ब्लॉक स्तरीय बैठकों, ईसीसीई दिवसों, बाल मेलों और शिक्षक मेलों के माध्यम से शंकरम्मा ने प्रारम्भिक वर्षों में थीम-आधारित अधिगम के महत्त्व के बारे में सीखा। और, आँगनवाड़ी में चिलिपिली पाठ्यक्रम[1] के अनुसार कार्यक्रम की शुरुआत करके बदलाव लाने का दृढ़ संकल्प लिया।

और फिर केन्द्र जीवन्त हो उठा

छोटे-छोटे क़दमों से बदलाव की शुरुआत हुई। शंकरम्मा ने अपना केन्द्र सुबह 9:30 बजे खोलना शुरू किया। वे दोपहर 1:30 बजे तक बच्चों को मुक्त खेल, गीत, कहानी सुनाना, संज्ञानात्मक, रचनात्मक और थीम-आधारित गतिविधियों और लर्निंग कॉर्नर की सामग्री से जोड़कर व्यस्त रखतीं।

> **केन्द्र के कोनों को समृद्ध और आकर्षक बनाने के लिए शंकरम्मा ने स्थानीय समुदाय और दुकानों से सामग्री जुटाई। माता-पिता को यह बात समझ में आने लगी कि साधारण घरेलू वस्तुएँ भी सीखने के लिए उपयोगी बन सकती हैं।**

चित्र 1: रंगों में ब्लॉक्स डुबोकर अपनी मर्ज़ी की आकृतियाँ बनाते बच्चे

केन्द्र में संसाधनों की कमी एक चुनौती थी। एक कार्यशाला में शंकरम्मा ने विभिन्न शिक्षण अधिगम सामग्री के उपयोग के बारे में जानकारी प्राप्त की थी। उससे प्रेरित होकर उन्होंने ख़ुद की सामग्री बनानी शुरू कर दी। अपने परिवार की मदद से उन्होंने प्रत्येक विद्यार्थी के लिए टीएलएम तैयार किए ताकि हर बच्चे के पास सक्रियता से काम करने के लिए कुछ-न-कुछ हो। इससे कक्षा का माहौल बदल गया। जो बच्चे पहले उदासीन रहा करते थे, अब हर गतिविधि में सक्रिय रूप से भाग लेने लगे।

पहले शंकरम्मा ज़ोर से कहानियाँ पढ़कर सुनाती थीं। बच्चे न तो ध्यान से सुनते थे न ही ज़्यादा याद रखते थे। उन्होंने अपना तरीक़ा बदला। ख़ुद से बनाए कहानी कार्ड और कठपुतलियों का इस्तेमाल करके उन्होंने कहानी सुनाने के चार-पाँच अलग-अलग तरीक़े खोजे। मसलन, मौखिक वर्णन, ज़ोर से पढ़ना, चित्र क्रम कहानियाँ, एकल अभिनय, रोल प्ले, आदि। इसका नतीजा काफ़ी प्रभावी रहा। जो बच्चे कभी चुपचाप बैठे रहते थे, अब उत्सुकता से पात्रों का अभिनय करते, और कहानियों को अपने शब्दों में सुनाने लगे।

शंकरम्मा रचनात्मक गतिविधियों में भी विविधता लेकर आईं। मसलन, रंग भरना, चित्रों पर मोती लगाना, काग़ज़ की छोटी-छोटी गोलियाँ चिपकाना, आदि। संज्ञानात्मक विकास के लिए, उन्होंने मिलान करने, पहेलियाँ हल करने और ग़ायब चित्रों की पहचान करने जैसी थीम-आधारित साप्ताहिक गतिविधियाँ शुरू कीं। ये अभ्यास आलोचनात्मक सोच और समस्या समाधान कौशल का आधार बनते हैं। अब तो खेल के समय ने भी एक नया रूप ले लिया। उन्होंने चिलिपिली थीम वाले नाटक, पारम्परिक खेल और लर्निंग कॉर्नर के ज़रिए मुक्त खेल शुरू किए। अभिनय करने का कॉर्नर (प्रिटेंड प्ले कॉर्नर) सबको बहुत अच्छा लगने लगा। बच्चे, माता-पिता, डॉक्टर या रसोइए की भूमिकाएँ निभाते, रोटी बनाने जैसी वास्तविक गतिविधियों की नक़ल करते, और सारा केन्द्र कल्पना और हँसी से गूँज उठता।

केन्द्र के कोनों को समृद्ध और आकर्षक बनाने के लिए शंकरम्मा ने स्थानीय समुदाय और दुकानों से सामग्री जुटाई। माता-पिता को यह बात समझ में आने लगी कि साधारण घरेलू वस्तुएँ भी सीखने के लिए उपयोगी बन सकती हैं।

जब शंकरम्मा को एहसास हुआ कि उनकी आँगनवाड़ी में कोई रनिंग ब्लैकबोर्ड नहीं है, उन्होंने किसी बाहरी मदद का इन्तज़ार नहीं किया, बल्कि दीवार के एक हिस्से को काले रंग से रँगकर लिखने का स्थान बना दिया। बच्चे उस पर खुलकर लिखते, और चित्र बनाते थे। यह सरल नवाचार आँख-हाथ के समन्वय और लेखन व चित्रांकन कौशल विकास का एक शक्तिशाली साधन बन गया।

उन्होंने आईसीडीएस कार्यक्रम के अन्य लाभार्थियों (जैसे– गर्भवती और स्तनपान कराने वाली माताओं, 0-3 साल के बच्चों, किशोरियों, अभिभावकों, समुदाय और अन्य सेवाओं के लाभार्थियों) को दोपहर 2 बजे के बाद ही केन्द्र में आने के लिए कहा ताकि सुबह का समय शाला-पूर्व गतिविधियों के

चित्र 2 : मुखौटे वाली गतिविधि में प्रतिभाग करते बच्चे

लिए पूरी तरह से सुरक्षित रहे। माता-पिता हैरान थे। जो बच्चे कभी इधर-उधर घूमते रहते थे, वे अब लगातार चार घण्टे आँगनवाड़ी में ही रहते थे। वे गाते, नाचते, सवाल पूछते, और कहानियाँ सुनाते थे।

ऐसे बढ़ा नामांकन

शंकरम्मा ने एक कमी और देखी–बच्चों का कम नामांकन। उनके प्रयासों के बावजूद गाँव के कई बच्चे अभी भी आँगनवाड़ी नहीं आ रहे थे। इसलिए उन्होंने एक और साहसिक क़दम उठाया–मासिक 'ईसीसीई दिवस'[2] का आयोजन। बच्चों ने बाल-गीत, कहानियाँ, फुर्ती से की जाने वाली गतिविधियाँ आदि जो कुछ सीखा था, उसे अभिभावकों और समुदाय के सामने प्रदर्शित किया। शंकरम्मा ने बच्चों की प्रगति उनके अभिभावकों के साथ भी साझा की। धीरे-धीरे जागरूकता बढ़ने लगी।

एक वर्ष में नामांकन 10 से बढ़कर 45 बच्चों तक पहुँच गया। उन्होंने 2-3 वर्षों में 20 से अधिक 'ईसीसीई दिवस' आयोजित किए। अपने गाँव में एक बाल मेला[3] भी आयोजित किया जिसमें 200 गाँव वाले जुटे। यह बाल मेला केन्द्र द्वारा नए तरीक़ों से किए गए प्रयासों को उजागर करने का एक मंच बन गया। बच्चों ने आत्मविश्वास के साथ गीत जैसी बहुत-सी संज्ञानात्मक गतिविधियाँ प्रस्तुत कीं और अपनी कलाकृतियाँ दिखाईं। इससे अन्य शिक्षिकाओं को प्रेरणा मिली, और अभिभावकों ने भी इसे बहुत सराहा।

> **नामांकन के लिए बच्चों ने बाल-गीत, कहानियाँ, फुर्ती से की जाने वाली गतिविधियाँ आदि जो कुछ सीखा था, उसे अभिभावकों और समुदाय के सामने प्रदर्शित किया। शंकरम्मा ने बच्चों की प्रगति उनके अभिभावकों के साथ भी साझा की। धीरे-धीरे जागरूकता बढ़ने लगी।**

यह सब देखकर पंचायत के सदस्यों और समुदाय ने आँगनवाड़ी के लिए रंग, खेल सामग्री, यहाँ तक कि छोटी-मोटी धनराशि भी दान में देनी शुरू कर दी। अभिभावक एक व्हाट्सऐप ग्रुप में शामिल हो गए जिस पर शंकरम्मा बच्चों की प्रगति के बारे में उन्हें रोज़ सूचित करती रहती थीं।

शंकरम्मा का केन्द्र अब सिर्फ़ एक आँगनवाड़ी केन्द्र नहीं था। यह सीखने का एक जीवन्त केन्द्र बन गया था!

बच्चों को अपनी आवाज़ मिल गई

बच्चे बहुत सारे गीत एक्शन करते हुए गा सकते थे, कहानियाँ सुना सकते थे, और अपनी भावनाएँ खुलकर व्यक्त कर सकते थे। अब उन्हें किसी सहायक की ज़रूरत नहीं पड़ती थी। वे सुबह 9:00 बजे तक उत्सुकता से केन्द्र पर पहुँच जाते थे।

इसका असर तब भी दिखा जब बच्चे प्राथमिक विद्यालय में गए। शिक्षकों ने बताया कि शंकरम्मा के विद्यार्थी ज़्यादा सक्रिय थे। वे सवाल पूछते थे और पाठ जल्दी समझ लेते थे।

एक कहानी आज भी उनके दिल के क़रीब है। गाँव का एक बच्चा, जिसके बारे में शुरू में यह सोचा जाता था कि वह बोलने में असमर्थ है, आँगनवाड़ी केन्द्र में आने के बाद बोलने लगा। उसके माता-पिता की ख़ुशी का ठिकाना नहीं रहा, क्योंकि पहले वे यही मानते थे कि उनका बच्चा गूँगा है।

एक और अभिभावक ने अपने बच्चे का दाख़िला निजी स्कूल में कराया था। जब उन्होंने देखा कि शंकरम्मा के तरीक़ों से केन्द्र में बहुत बदलाव आया है तो अभिभावक ने स्वीकार किया कि "हमारा बच्चा यहाँ बेहतर सीख सकता है", और बड़े गर्व के साथ बच्चे को फिर से आँगनवाड़ी केन्द्र में दाख़िल करवाया।

> **शंकरम्मा के तरीक़ों से केन्द्र में बहुत बदलाव आया, अभिभावक ने स्वीकार किया कि "हमारा बच्चा यहाँ बेहतर सीख सकता है", और बड़े गर्व के साथ बच्चे को फिर से आँगनवाड़ी केन्द्र में दाख़िल करवाया।**

कुछ चुनौतियाँ और समाधान

शंकरम्मा को नए बच्चों के साथ कई चुनौतियों का सामना भी करना पड़ा। कहानियाँ सुनाते समय बच्चे ध्यान केन्द्रित नहीं कर पाते थे। ग़ैर-कन्नड़ भाषी समुदाय के कुछ बच्चे कन्नड़ नहीं समझ पाते थे। वे आपस में बातें करते थे, और उन्हें घेरे में एक साथ बैठाना मुश्किल लगता था। लेकिन इन चुनौतियों से उनका हौसला नहीं टूटा, और उन्होंने छोटी-मोटी समस्याओं का समाधान ढूँढ़ लिया। कहानी सुनाते समय उन्होंने निम्नलिखित रणनीतियाँ अपनाईं :

चित्र 3 : आँगनवाड़ी की खेल गतिविधि में शामिल बच्चे

- बच्चों का ध्यान आकर्षित करने के लिए डफली जैसे एक वाद्य यंत्र खंजरी का उपयोग करना।
- ग़ैर-कन्नड़ भाषी समुदाय के बच्चों को कन्नड़ भाषी बच्चों के साथ बैठकर खेलने के लिए प्रोत्साहित करना।
- बच्चों का ध्यान आकर्षित करने के लिए कहानी सुनाते समय प्रश्न पूछना। उदाहरण के लिए, कौन बोल रहा है; आगे क्या होगा; आदि।
- पुनः ध्यान आकर्षित करने के लिए ताली बजाना (मसलन, केले की ताली—बच्चे एक और दो की गिनती पर ताली बजाते हैं, फिर ऐसा अभिनय करते हैं जैसे केला छीलकर खा रहे हों)।
- बच्चों को ध्यान केन्द्रित करने में मदद करने के लिए कहानी से सम्बन्धित चित्र कार्ड का उपयोग करना।
- बच्चों की आपस में बात करने की आदत को कम करने के लिए कहानियाँ सुनाते समय कठपुतलियों का उपयोग करना।

गीत गाते समय भी उन्होंने महसूस किया कि कुछ बच्चे अनुसरण करने या साथ गाने में असमर्थ हैं। उन्हें गाते समय वाक्य बनाने और शब्दों को जोड़ने में कठिनाई होती थी। वे गाते समय एक घेरे में खड़े नहीं होते थे। यहाँ तक कि जब वे ख़ुद गाने के बाद बच्चों से उसे दोहराने के लिए कहतीं, तब भी कुछ बच्चे एक साथ नहीं, बल्कि अलग-अलग या अकेले गाते थे। कुछ चुप रहते थे, और बिल्कुल भी नहीं गाते थे। शंकरम्मा के पास इनसे उबरने के भी अपने तरीक़े थे।

- उन्होंने पहले प्रदर्शन के तौर पर गीत गाना शुरू किया। फिर बच्चों से दोहराने के लिए कहा।
- वे गीत में तुकबन्दी वाले शब्दों, शब्द संयोजनों और वाक्य रचना पर ध्यान केन्द्रित करती थीं।
- गाते समय क्रियाओं, भाव और हाव-भाव का उपयोग करके, उन्होंने गतिविधि को और अधिक आकर्षक बना दिया जिससे भाषा विकास में मदद मिली।

> **शंकरम्मा का सफ़र दर्शाता है कि कैसे किसी शिक्षिका का समर्पण प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा की कहानी को एक नए सिरे से लिख सकता है। उन्होंने संशय को विश्वास में, मौन को वाणी में, और ख़ाली जगहों को आनन्द के केन्द्रों में बदल दिया।**

उनकी अन्तर्दृष्टि न केवल उनके अकादमिक ज्ञान, बल्कि आँगनवाड़ी कक्षाओं में उनके लम्बे अनुभव को भी दर्शाती थी।

जोगुर-2 से कोतनूर-डी तक शंकरम्मा का सफ़र दर्शाता है कि कैसे किसी शिक्षिका का समर्पण प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा की कहानी को एक नए सिरे से लिख सकता है। उन्होंने संशय को विश्वास में, मौन को वाणी में, और ख़ाली जगहों को आनन्द के केन्द्रों में बदल दिया। आज, उनके बच्चे आत्मविश्वास, जिज्ञासा और सीखने की चाहत के साथ प्राथमिक विद्यालयों में प्रवेश करते हैं। उनकी कहानी सिर्फ़ आँगनवाड़ियों को बदलने की कहानी नहीं है, बल्कि भविष्य को बदलने की भी है।

[1]चिलिपिली पाठ्यक्रम कर्नाटक में 3 से 8 वर्ष की आयु के बच्चों के लिए विकसित प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा (ईसीई) कार्यक्रम है।
[2]बच्चों के अधिगम को प्रदर्शित करने के लिए आँगनवाड़ी केन्द्रों में महीने में एक बार 'ईसीसीई दिवस' मनाया जाता है ताकि अभिभावकों व समुदाय में शाला-पूर्व शिक्षा, स्वस्थ दिनचर्या और खेल-आधारित शिक्षा के महत्त्व के बारे में जागरूकता पैदा हो सके।
[3]बाल मेला एक वार्षिक / अर्धवार्षिक आयोजन है। इसमें विभिन्न आँगनवाड़ी केन्द्रों के बच्चे खेलने, सीखने और अपनी प्रतिभा दिखाने के लिए इकट्ठा होते हैं। अभिभावक और समुदाय के सदस्यों के भी भाग लेने के कारण यह आयोजन प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा का उत्सव बन जाता है।

अँग्रेज़ी से नलिनी रावल द्वारा अनुवादित।

अनन्या डी अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन में एसोसिएट के रूप में शामिल हुईं और कर्नाटक के कलबुर्गी ज़िले के चित्तपुर ब्लॉक की ब्लॉक समन्वयक हैं। वर्तमान में, वे ईसीई, प्राथमिक भाषा और गणित, उच्च प्राथमिक गणित जैसे क्षेत्रों में काम कर रही हैं, और युवाओं के साथ फ़ाउण्डेशन के कार्यों में योगदान दे रही हैं।

सम्पर्क : ananya.d@azimpremjifoundation.org